Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A. Part – II (Hons)
Paper – III
नीतिशास्त्र (Ethics)

Notes GRB BOOKS

1. नैतिक प्रयोजन के विषय: प्रयोजन, अभिप्राय (Motive and Intention)

प्रयोजन (Motive) — विलियम लिली के शब्दों में "प्रयोजन वह चेतनमानसिक प्रवृत्ति है, जो मनुष्य को विशेष रीति से काम करने में संलग्न कर सकती है।"

मैकेंजी के अनुसार "प्रयोजन का अर्थ या तो अनुमान है जो हमें प्रवृत्त करता है या किसी विशेष वस्तु से कर्म करने के लिए उभरता है।" प्रो० स्टीफेन भी मानते हैं कि "प्रयोजन एक जटिल मानसिक स्थिति है, जो व्यक्ति को कर्म की ओर प्रेरित करती है।"

मनुष्य की अनेक आवश्यकताएँ रहती हैं, इसलिए उसकी इच्छाएँ भी अनेक हो जाती हैं। मनुष्य की शक्ति सीमित है, वह एक ही समय कई इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकता। इन इच्छाओं में एक प्रकार का संघर्ष छिड़ जाता है। इनमें से प्राथमिकता और महत्व के अनुसार इच्छा विशेष को चुन लेना पड़ता है और इसी की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना पड़ता है।

प्रो० [illegible] के अनुसार "जब इच्छा का चयन हो जाता है, तब वह प्रयोजन बन जाती है।" (A desire when chosen becomes motive.)।

इच्छा (Desire) — "किसी वस्तु को प्राप्त करने की लालसा (craving), जिससे हम संतुष्ट होते हैं, जब

सुगम पास-बुक

GRB BOOKS

2

Notes

हमारी भीतर जागती है तब हम इच्छा कहते हैं।" इच्छा व्यक्ति की वह मानसिक अवस्था है जिसके द्वारा वह किसी अभाव की पूर्ति चाहता है। इच्छा आवश्यकता (want) या प्राकृतिक भूख (appetite) से भिन्न है। आवश्यकता तभी इच्छा का रूप लेती है जब उस आवश्यकता की पूर्ति की कामना हो। इच्छा में आवश्यकता या अभाव रहता है किंतु इच्छा इनसे भिन्न है। अभिलाषा भी इच्छा (wish) से भिन्न है। मान लिया, किसी को धनी होने की अभिलाषा है। यह इच्छा नहीं है। धनी होने की अभिलाषा तभी हो सकती है जब व्यक्ति को धनप्राप्ति के साधन का ज्ञान हो और उसकी प्राप्ति के लिए वह प्रयत्नशील हो।

इच्छा एक जटिल मानसिक अवस्था है। इसमें ज्ञानात्मक रागात्मक और क्रियात्मक स्तर पर व्यक्ति साध्य वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र आकांक्षा से प्रेरित होकर क्रियाशील हो जाता है।

अभिप्राय (Intention) :— अभिप्राय प्रयोजन से अधिक व्यापक है। अभिप्राय में ~~कल्याण~~ साध्य और साधन दोनों सम्मिलित हैं। अभिप्राय — प्रयोजन + साधन। अभिप्राय में इन दोनों का रहना आवश्यक है।

(1) कर्म का मुख्य प्रयोजन (Motive) जिसके लिए क्रिया होती

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

(ii) साधन (means) का निर्धारण जो साध्य की प्राप्ति में सहायक हैं,

"उपयोग तथा अभिप्राय का [illegible] में सम्बन्ध" [illegible]

(iii) कुछ प्रत्याशित (foreseen) परिणामों पर विचार।

अतः हम संक्षेप में कह सकते हैं कि अभिप्राय (Intention) सबसे व्यापक है। इसके अंदर प्रयोजन (motive) आ जाता है और प्रयोजन के अंदर इच्छा आ जाती है। अभिप्राय के अंतर्गत इच्छा और प्रयोजन दोनों आ जाते हैं।

अभिप्राय कई प्रकार के होते हैं—

(a) कर्म के तात्कालिक और दूरस्थ अभिप्राय दो व्यक्तियों का तात्कालिक अभिप्राय एक हो सकता है— जैसे किसी डूबते व्यक्ति को बचाना किंतु दोनों के दूरस्थ अभिप्राय दो हो सकते हैं। एक का अभिप्राय उसे बचाकर उसके अभिभावक से पुरस्कार प्राप्त करना और दूसरे का अभिप्राय उसे बचाकर पुलिस के हाथ सजा के लिए सौंपना हो सकता है।

(b) कर्म के बाह्य और

पास-बुक
EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

बौद्धिक अभिप्राय [illegible] भिखारी [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] गया हुआ है और [illegible] मानसिक शांति को [illegible] [illegible] भी [illegible] [illegible] किया [illegible] [illegible] में आपका लौकिक अभिप्राय [illegible] है किन्तु [illegible] [illegible] अपने [illegible] को [illegible] अपनी मानसिक शांति प्राप्त करता है।

(c) कर्म के प्रत्यक्ष (Direct) और परोक्ष (indirect) अभिप्राय — मान लो कि कोई व्यक्ति कार से जाते हुए अपने दुश्मन की हत्या के अभिप्राय से उस कार पर बम फेंकता है और उसमें बैठे सभी की मृत्यु हो जाती है। यहाँ व्यक्ति का प्रत्यक्ष अभिप्राय अपने दुश्मन की हत्या करना है किंतु उसका परोक्ष अभिप्राय उस कार में बैठे अन्य लोगों की भी हत्या करना है।

(d) कर्म के चेतन और अचेतन अभिप्राय — आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार अचेतन मन (unconscious mind) का प्रभाव हमारे कर्मों पर निश्चित रूप से पड़ता है। किसी कर्म के करने में हमारा अचेतन अभिप्राय भी रहता है, जिसकी जानकारी अक्सर कर्ता को भी नहीं रहती।

(e) कर्म के आदर्शगत (Formal) और वस्तुगत (Material)

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

अभिप्राय होते रहते हैं — कम्युनिस्ट पार्टी और जनसंघ दोनों रहते हैं — कम्युनिस्ट पार्टी और जनसंघ दोनों का तत्काल अभिप्राय है कांग्रेस सरकार को देश में समाप्त करना। किंतु दोनों के आत्यंतिक अभिप्राय भिन्न हो सकते हैं। कम्युनिस्ट पार्टी का उद्देश्य देश में मजदूरों का राज्य लाना है, तो जनसंघ आर्य-संस्कृति का उत्थान करना चाहता है।

अभिप्राय प्रयोजन से अधिक व्यापक है। अभिप्राय के अंदर प्रयोजन और साधन दोनों ही आते हैं। जैसे प्रश्न उठता है कि नैतिक निर्णय का विषय प्रयोजन है या अभिप्राय।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS